7

कक्षा शिक्षण में वार्तालाप गतिविधि, *रोल प्ले* और तत्काल प्रस्तुति

शारदा कुमारी*

हम सभी जानते हैं कि निरंतर ज्ञान संचय, स्मरण शक्ति का अभ्यास और रट्टेबाजी यह किसी भी स्थिति में पढ़ाई नहीं है। रट्टेबाजी तो बच्चों के स्वास्थ्य के साथ-साथ उनके बौद्धिक विकास के लिए भी हानिकारक है। अत: ज़रूरी है कि बच्चों को कल्पना और सृजन के संसार में झरने सा बहता बौद्धिक जीवन दिया जाए। इस संदर्भ में एक ऐसा विद्यालयी परिवेश होना ज़रूरी है जहाँ बच्चों द्वारा प्रेक्षण करना, सोचना, चिंतन-मनन करना, एक-दूसरे के सहयोग से तरह-तरह की परियोजनाओं को पूरा करना यह सब ज़रूरी है। इसके लिए कक्षाओं में वार्तालाप संबंधी गतिविधियों को स्थान देना अनिवार्य है। वार्तालाप संबंधी गतिविधियों में महत्वपूर्ण हैं— *रोल प्ले* व तत्काल प्रस्तुति। प्रस्तुत लेख *रोल प्ले* व तत्काल प्रस्तुति के महत्त्व, उसके आयोजन-संचालन, कक्षा शिक्षण में उपादेयता और प्रतिपुष्टि देने के तरीकों पर विस्तार से रोशनी डालता है। यह लेख विशेष रूप से यह रेखांकित करता है कि कक्षा को सजीव एवं रोचक बनाने में रोल प्ले की अहम भूमिका है।

गुरु रवीन्द्रनाथ जी से जुड़े एक प्रसंग के साथ अपने लेख की शुरुआत करती हूँ। वाकया कुछ इस प्रकार से है कि भारत के सुदूर क्षेत्र में एक प्राथमिक विद्यालय था। यहाँ के समस्त अध्यापकों के आग्रह पर गुरु रवीन्द्रनाथ जी इस विद्यालय में यहाँ की गतिविधि का अवलोकन करने आए हुए थे। वे जिस समय विद्यालय में पहुँचे, उस समय प्रातःकालीन सभा का आयोजन चल रहा था। सभी विद्यार्थी कक्षावार कतारों में खड़े थे। कतारें सिर्फ़ कक्षावार ही नहीं, बल्कि बच्चों के 'छोटे से लंबे' कद के अनुसार बनी थीं। सभी हाथ जोड़कर, आँख मींचकर (बंद करके), तल्लीनता का भाव प्रदर्शित करते हुए 'ईश प्रस्तुति' कर रहे थे। समवेत गायन के पश्चात् ड्रम की थाप के साथ शारीरिक व्यायाम किया गया।

अध्यापक पैनी दृष्टि से चारों ओर घूम-घूम कर निगरानी कर रहे थे और बीच-बीच में गुरु जी की ओर भी देख लेते थे, संभवतया यह जानने के लिए कि वे कितना प्रभावित हो रहे हैं। गुरु जी के निर्विकार भाव से अध्यापकों के चेहरे पर कुछ निराशा की लकीरें खिंचती, परंतु तत्काल वे लकीरें जबरन ओढ़ी गई मुस्कान में बदल जातीं। शायद इस प्रतीक्षा में कि गुरु जी किसी न किसी गतिविधि से तो प्रभावित

* *प्राचार्य*, मण्डल शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, आर.के.पुरम, नयी दिल्ली 110 022

होंगे ही और उनके मुख से 'वाह!' तो अवश्य निकलेगी।

शारीरिक व्यायाम के पश्चात् विद्यालय की प्रमुख द्वारा गुरुजी से आग्रह किया कि वे विद्यर्थियों को संबोधित करें उन्हें शुभकामनाएँ दें। गुरु जी ने संकेत द्वारा स्पष्ट कर दिया कि वे बच्चों की कक्षाओं का भी अवलोकन करना चाहेंगे और उनसे वहीं कक्षाओं में ही बात करना चाहेंगे। उनका मंतव्य समझकर प्रातःकालीन सभा के विसर्जन का आदेश दिया गया।

ड्रम की थाप पर कदम से कदम मिलाते विद्यार्थी अपनी-अपनी कतारों में अपनी कक्षाओं में चले गए। चारों ही तरफ 'व्यवस्था' का साम्राज्य था। समूचा विद्यालयी परिवेश 'चुप्पी' के आवरण में लिपटा हुआ था।

सभी विद्यार्थियों के कक्षाओं में पहुँच जाने के बाद घंटी की आवाज़ आई — 'टन' यानी कि पहला सत्र आरंभ होता है। विद्यालय प्रमुख ने गुरुजी से कहा कि कक्षाएँ आरंभ हो चुकी हैं, आप अवलोकन हेतु चल सकते हैं।

गुरु जी ने सबसे पहले विद्यालय की सबसे छोटी कक्षा यानी कि शुरुआती कक्षा 'पहली' में जाने की इच्छा जताई। विद्यालय प्रमुख उन्हें लेकर वहाँ पहुँचीं। गुरु जी ने देखा, टाटपट्टी बहुत करीने से बिछी हैं। बच्चे कतारबद्ध बैठे हैं, उनके एक ओर यानी सभी बच्चों के बायीं ओर उनके बस्ते रखे हुए हैं, सभी के सामने उनकी तख्तियाँ हैं। एक ओर अध्यापिका श्यामपट्ट पर कुछ लिख रही हैं, साथ-साथ कुछ बोल भी रही हैं वहीं दूसरी ओर विद्यार्थी सुनने-लिखने का कार्य कर रहे हैं। गुरुदेव जी के आगमन पर सभी ने एक साथ लगभग यन्त्रवत-सा खड़ा होकर समवेत स्वर में उनका अभिवादन किया। गुरुदेव जी का उत्तर पाकर, अध्यापिका के निर्देश पर सभी एक साथ बैठ गए और पुनः अपने लेखन कार्य में तल्लीन हो गए। बीच-बीच में कोई-कोई अध्यापिका का इस प्रकार पहली कक्षा से पाँचवी कक्षा तक का अवलोकन हो गया। गुरुदेव जी ने किसी भी कक्षा में न तो किसी को संबोधित किया और न ही किसी से कोई बात की। अलबत्ता उन्होंने अब वापिस जाने की इच्छा ज़रूर जताई। विद्यालय प्रमुख गुरुदेव जी के इस निर्विकार भाव से बहुत निराश थीं। किसी प्रकार से स्वयं को संयत कर जलपान का आग्रह किया।

जलपान की औपचारिकता के बाद उन्होंने विद्यालय की 'आगंतुक डायरी' उनके सामने रखी जिसमें वे अपने भाव संबंधी टिप्पणी उसमें दर्ज़ कर सकें।

पाठक मित्रो! जानते हैं, गुरुदेव जी ने क्या लिखा? उन्होंने लिखा, ''क्या इस विद्यालय में बच्चे भी पढ़ते हैं?''

गुरुदेव जी तो अपने भाव व्यक्त करके चले गए पर समूचे अध्यापक समूह को सकते में छोड़ गए। उन सभी के मन में एक ही सवाल था, ''कमी कहाँ रह गई।''

साथियो, गुरुदेव जी की इस टिप्पणी से आपके मन में भी तो हलचल मची होगी। आपका अनुमान क्या कहता है? गुरुदेव जी ने ऐसा क्यों लिखा होगा कि ''क्या इस विद्यालय में बच्चे भी पढ़ते हैं?'' जबकि वे देख रहे थे कि बच्चे मौजूद है, कक्षाओं में भी और प्रातःकालीन सभा में भी।

आपका अनुमान संभवतया इस ओर संकेत करे कि समूचे परिवेश से बच्चों के बीच आपसी संवाद एवं वार्तालाप और उससे उपजा सहज सरस कोलाहल गायब था। निश्चित रूप से जहाँ बच्चे हैं तो वहाँ जिज्ञासा और जिज्ञासा से उपजा वार्तालाप और

आपसी वार्तालाप से उपजा माधुर्य समेटे कोलाहल तो होगा ही। यही तथ्य उस विद्यालयी परिवेश से गायब था।

अध्यापक और बच्चों तथा बच्चों और बच्चों के बीच वार्तालाप होना एक बहुत ही सहज और स्वाभाविक सी प्रक्रिया है और कक्षायी शिक्षण में इसका बहुत महत्त्व है। वार्तालाप सबंधी गतिविधियाँ मुख्यतः दो रूपों में करवायी जा सकती हैं —

- अनौपचारिक संवाद
- *रोल प्ले* और तत्काल प्रस्तुति

पहला स्वरूप यानी कि अनौपचारिक संवाद, जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है जिसमें विद्यार्थियों को आपस में बातचीत करने के भरपूर मौके दिए जाएँ। उन्हें पाँच-पाँच या इससे भी अधिक की संख्या में समूहों में बैठाएँ और उनके शारीरिक-मानसिक स्तर को ध्यान में रखते हुए कुछ विषय बिंदु दें जिन पर वे आपस में मुक्त भाव से बातीचत करें।

ये विषय बिंदु इस प्रकार से हो सकते हैं —

- मेरा घर
- मेरे घर में रहने वाले लोग 'इसमें घर में रह रही छिपकली, कीट-मकौड़े भी शामिल हैं'
- मेरा प्रिय खेल
- शाम को हम क्या-क्या करते हैं?
- मेरे संगी-साथी 'विद्यालय के बाहर वाले'
- मेरे खिलौने
- हम स्कूल कैसे और किसके साथ आते हैं?
- मेरे बस्ते में क्या-क्या रहता है?
- साइकिल की सवारी और उसका मज़ा
- बस की सैर किसने की?
- बारिश में नहाए कभी क्या?
- प्रिय पशु 'जंगली भी हो सकता है'
- किससे डर लगता है?
- टी.वी. में क्या-क्या देखा?

वार्तालाप गतिविधियाँ अनौपचारिक हों या *रोल प्ले* से संबंधित, उनके लिए विषयों की तो कोई सीमा ही नहीं, बस ध्यान ये रखना है कि विषय बिंदु बच्चों के परिवेश से हटकर न हों। जो विषय बच्चों के सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश में ही नहीं है तो उनसे उस विषय पर संवाद की अपेक्षा कैसे की जा सकती है।

अब हम बात करते हैं *रोल प्ले* व तत्काल प्रस्तुति की।

रोल प्ले और तत्काल प्रस्तुति में बच्चों को एक परिस्थिति और भूमिका की कल्पना करके अभिनय करने के लिए कहा जाता है। इस काम में बच्चे अपनी भाषा का उपयोग स्वतंत्रतापूर्वक करते हैं। बच्चों को वे भूमिकाएँ दी जा सकती हैं जिन चरित्रों को वे अपने दैनिक जीवन में देखते हैं, जैसे — 'डॉक्टर और मरीज़', 'अभिभावक और बच्चा', 'बस डाइवर और यात्री' या काल्पनिक चरित्र 'राजकुमारी व राक्षस', 'अंतरिक्ष यात्री', 'चिड़ियाघर के जानवर' आदि विषय लिए जा सकते हैं।

रोल प्ले के लिए किसी परिस्थिति का अभिनय भर करते रहना ही उपयुक्त नहीं है। *रोल प्ले* तब अधिक सफल रहता है जब इसमें समस्या का समाधान सम्मिलित हो।

उच्च स्तरों पर *रोल प्ले* का प्रयोग उन परिस्थितियों की खोज करने के लिए किया जा सकता है जिनका बच्चे वास्तविक जीवन में सामना करेंगे। जैसे—

असमंजस का निपटारा, कार्य सामना, संसाधनों को साझा करना, नियम बनाना और पालन करना आदि। इस प्रकार का शैक्षिक *रोल प्ले* बच्चों को भयमुक्त तरीके से मुद्दों की पड़ताल करने में मदद करता है और बहुत रोचक चर्चाओं तक पहुँच सकता है।

रोल प्ले बहुत साधारण हो सकता है, जिसमें थोड़ी-सी तैयारी और कुछ मंच सामग्री की ज़रूरत होगी। इसके अलावा *रोल प्ले* अधिक विस्तृत भी हो सकता है जिसमें आप को भाषा तैयार करने और परिस्थिति निर्माण करने में अधिक समय लगाना पड़ेगा। जैसे — 'बाज़ार' *रोल प्ले* में दो या तीन बच्चे या पूरी कक्षा सम्मिलित हो सकती है।

सामान्यतः *रोल प्ले* या तत्काल प्रस्तुति कक्षा में करने के लिए तीन चरण होते हैं। पहले चरण में, अध्यापक परिस्थिति निर्माण करके और यह सुनिश्चित करके कि बच्चे के पास आवश्यक शब्दावली है, बच्चों को *रोल प्ले* के लिए तैयार करते हैं। दूसरे चरण में बच्चे *रोल प्ले* करते हैं और शिक्षक उनका अवलोकन करते हैं। साथ ही तीसरे चरण की तैयारी के लिए टिप्पणियाँ दर्ज़ करते रहते हैं। इस चरण में यह आवश्यक है कि जब तक बहुत ज़रूरी न हो, दखल न किया जाए। एक-एक कर जब *रोल प्ले* समाप्त हो जाए तब शिक्षक प्रक्रिया 'बच्चों ने क्रियाकलाप कैसे किया' और परिणाम 'यह कैसा रहा' पर पुनरावलोकन और प्रतिपुष्टि का आयोजन करते हैं।

व्यवहार में एक *रोल प्ले* को तैयार करने के मूल चरण निम्नलिखित हो सकते हैं —

- बच्चों को जिस भाषा की ज़रूरत होगी, उसको प्रस्तुत करना और अभ्यास करना।
- चरित्रों को प्रस्तुत करना, यहाँ आप बच्चों को भूमिका कार्ड भी दे सकते हैं जिसमें वह सारी सूचनाएँ होंगी, उस भूमिका, करने में जिनकी ज़रूरत होगी।
- परिस्थिति प्रस्तुत करें और बच्चों को कार्य सौंपे।
- अधिक नियंत्रित वातावरण में कुछ विशेष संवादों का अभ्यास करें।

शुरुआत कुछ छोटे से

सभी बच्चे अभिनय में कुशल नहीं होते, विशेषकर तब जबकि नाटक उनकी प्रथम भाषा की पाठ्यचर्या का हिस्सा न हो। अपनी कक्षा में नाटक की शुरुआत छोटे-छोटे चरणों में करें। आसान, निर्देशित क्रियाकलापों से शुरुआत करें, जैसे — उदाहरण के लिए शेर की नकल और फिर कम नियंत्रित गतिविधियों की ओर बढ़ें। जैसे — साधारण-सी चीज़ें भी सिखानी होंगी। जैसे बाहों को सीधा खींचना, छोटे और बड़े कदम उठाना, उनके चेहरे और पूरे शरीर को भावनाएँ दिखाने के लिए इस्तेमाल करना। 'पूर्ण शारीरिक प्रतिक्रिया' वाले क्रियाकलाप नाटकीकरण का सर्वश्रेष्ठ मार्ग हैं। उनमें बच्चे अपने शरीर द्वारा भाषा पर प्रतिक्रिया देते हैं, जो अभिनय और नकल का पहला चरण है। बच्चे कई बार यह अनुभव नहीं करते कि वे चीज़ों को अलग-अलग तरीकों से भी कह सकते हैं। केवल शब्दों या वाक्यों को ऊँची, नीची, गुस्से वाली या दुखी आवाज़ में कहने के लिए बच्चों को कहना, उनकी आवाज़ की शक्ति की खोज करने का एक अच्छा मार्ग हो सकता है। बच्चों को यह देखने की ज़रूरत है कि आप नाटकीकरण के लिए बहुत उत्साहित हैं और

जो क्रियाकलाप आप सुझाते हैं, उन्हें करने में आनंद लेते हैं। आप एक आदर्श के रूप में कार्य करते हैं और उन्हें कक्षा में सक्रिय बनने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

क्या हमारी कक्षा व्यवस्थित है?

अधिकतर गतिविधियों में बच्चे बड़े होते हैं और सामान्यतः कक्षा-कक्ष के सामने का स्थान पर्याप्त होता है। यदि बच्चे एक गोले में खड़े होते हैं या समूहों में कार्य करते हैं, तब आपको अधिक स्थान की ज़रूरत होगी। मेज़ों और कुर्सियों को कक्षा-कक्ष के किनारों तक खिसका दें या बच्चों को सभागार या मैदान में ले जाएँ। यदि आप नाटक के क्रियाकलाप अधिक करवाते हैं तो बच्चों को मेज़-कुर्सियाँ किनारे पर शांति से रखना सिखाएँ। प्रत्येक बच्चे को एक चीज़ खिसकाने के लिए दीजिए और कुछेक बार अभ्यास कीजिए। इसे एक प्रतियोगिता बना दीजिए। उन्हें जितना संभव हो उतना तेज़ और उतना शांत होना चाहिए। यदि आपके पास स्थान की गंभीर समस्या है तो कठपुतलियों का प्रयोग कर सकते हैं।

आपकी प्रतिपुष्टि ज़रूरी है

आप व्यावसायिक अभिनेता या अभिनेत्रियों को प्रशिक्षित नहीं कर रहे हैं, बल्कि बच्चों को उनकी भाषा के प्रयोग और अभ्यास का एक आनंददायक रास्ता दे रहे हैं। बच्चों ने जो कुछ किया है, आपको उसके बारे में प्रतिपुष्टि देनी होगी। केवल अंतिम उत्पाद भाषा ही नहीं, बल्कि वे जिस प्रक्रिया से गुज़रे हैं वो भी है। एक-दूसरे से किस तरह सहयोग किया है और किस तरह वे निर्णयों पर पहुँचे हैं, इसके बारे में भी प्रतिपुष्टि देनी होगी। टिप्पणी करने के लिए कुछ सकारात्मक बातें ढूँढ़े। बच्चों के कार्य में कुछ क्षेत्र ऐसे होंगे जिनमें सुधार किया जा सकता है। अतः उन्हें जो प्रतिपुष्टि देंगे, यह उसका हिस्सा होना चाहिए। जब बच्चे क्रियाकलाप कर रहे हों, उन्हें देखें और सुनें पर दखल देने का प्रयास न करें। आप जो कुछ देख रहे हैं उसके बारे में टिप्पणियाँ दर्ज करते रहें। आपका मुख्य लक्ष्य प्रतिक्रिया है, लेकिन बच्चे 'प्रदर्शन' को पाठ के सबसे महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में देखेंगे। आपको उनके प्रदर्शनों को महत्त्व देने की आवश्यकता है। जब वे समाप्त कर लें, आप कुछ समूहों को अपना कार्य दिखाने के लिए कह सकते हैं। तब आप उन्हें प्रतिपुष्टि दें। यह करने के कई तरीके हैं, जैसे — आप उनके लिए 'प्रतिपुष्टि पत्र' बना सकते हैं और उसका इस्तेमाल कर सकते हैं। यदि सृजनात्मक प्रतिपुष्टि नाटकीकरण गतिविधियों का नियमित भाग बन जाए, बच्चे धीरे-धीरे अपनी नाटकीकरण क्षमताओं और भाषा को सुधार लेंगे।

कक्षायी शिक्षण में वार्तालाप संबंधी गतिविधियों का महत्त्व

सभी जानते हैं कि विद्यार्थी अवधारणाओं के प्रति कब अधिक समझ बनाते हैं, क्या वे जब ब्लैकबोर्ड पर लिखे हुए को कॉपी पर उतारते हैं या फिर जब अवधारणाओं पर आपसी संवाद कर उसे अभिनय या *रोल प्ले* द्वारा प्रस्तुत करते हैं। उदाहरण के तौर पर, कक्षा 7 के विद्यार्थियों को चुनाव की प्रक्रिया समझानी है। अब इसके लिए हमारे पास दो तरीके

हैं — एक तरीका, जिसमें अध्यापक ने पुस्तक में लिखी बातों को पढ़ा या पढ़वाया और फिर मुख्य बिंदु श्यामपट्ट पर लिख दिए। इसके बाद विद्यार्थियों से कहा कि श्यामपट्ट पर लिखे बिंदुओं को उतार लें और याद कर लें।

दूसरा तरीका, जिसमें अध्यापक बच्चों के साथ संवाद करें कि क्या उन्हें याद है कि कभी उनके परिवार में या आस-पास कोई वोट देने गया था। समूची कक्षा में कुछ बच्चे अवश्य ही ऐसे होंगे जिन्हें अनुभव होगा। उन्हें अपने अनुभव सुनाने का मौका दिया जाए। अब सभी बच्चों को उन अनुभवों द्वारा प्रस्तुत करने के लिए कहा जाए। जैसे कि कोई वोटर लिस्ट लेकर बैठा है, कोई अँगुली में स्याही लगाने की भूमिका में, कोई स्वयं मतदाता है, इस प्रकार सभी विद्यार्थी चुनाव की प्रक्रिया अभिनीत करते हैं।

इस तरीके से किस प्रकार का परिवेश सृजित हुआ?

- कक्षायी परिवेश की नीरसता और एकरसता भंग हुई, उसके स्थान पर रोचकता बनी रही।
- विद्यार्थियों के अनुभवों के आधार पर अवधारणा स्पष्ट की गई।
- सभी विद्यार्थी सक्रिय, सजग, चौकन्ने व उत्सुक रहे।
- सभी विद्यार्थियों को शिक्षण अधिगम में भाग लेने का अवसर मिला यानी कि सभी विद्यार्थी क्रियाशील बने रहे।
- विद्यार्थी अपनी भाषा में अपनी बात कह सके। उन्हें समूह भावना के साथ काम करने के अवसर मिले।
- कक्षा शिक्षण में विविधता व सामूहिकता का भाव बना रहा।

उपर्युक्त के साथ-साथ और भी लाभ तलाशे जा सकते हैं।

संदर्भ

राजपूत, जगमोहन सिंह और सरला राजपूत. 2000. *मुसकान का मदरसा*. एन.सी.ई.आर.टी. नयी दिल्ली.